

महिला प्रव्रजन और उनके सामाजिक सशक्तिकरण में भूमिका

Dr. Shipra Singh

Assistant Professor, Dau Dayal Mahila P G College
Firozabad, Uttar Pradesh

सार

महिलाओं का आंतरिक और अंतर्राष्ट्रीय प्रवास एक महत्वपूर्ण सामाजिक घटना के रूप में उभरा है जो विकास, लिंग गतिशीलता और सशक्तिकरण के पैटर्न को प्रभावित करता है। पारंपरिक रूप से पुरुष प्रधान श्रम गतिशीलता के लेंस के माध्यम से देखा जाता है, हाल के रुझान स्वतंत्र प्रवासियों के रूप में महिलाओं की बढ़ती स्वायत्तता और एजेंसी को उजागर करते हैं। यह शोधपत्र महिलाओं के प्रवास और सामाजिक सशक्तिकरण के बीच जटिल अंतर्संबंध की खोज करता है, यह जांचता है कि प्रवास कैसे घरों, समुदायों और श्रम बाजारों में उनकी भूमिकाओं को नया रूप देता है। अंतःविषय अनुसंधान पर आधारित, अध्ययन आर्थिक अवसरों, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा तक पहुंच और लिंग मानदंडों में बदलाव की जांच करता है जो क्षेत्रों में महिलाओं के आंदोलन के साथ होते हैं। यह प्रवासी महिलाओं के सामने आने वाली चुनौतियों को भी उजागर करता है, जिसमें शोषण, भेदभाव और सामाजिक सुरक्षा की कमी शामिल है। केस स्टडी और नीतिगत ढाँचों का विश्लेषण करके, शोधपत्र महिलाओं की निर्णय लेने की शक्ति, वित्तीय स्वतंत्रता और सामाजिक स्थिति को बढ़ाने में प्रवास की परिवर्तनकारी क्षमता पर जोर देता है। अंततः, शोध महिलाओं के अधिकारों का समर्थन करने और समावेशी विकास को बढ़ावा देने के लिए लिंग-संवेदनशील प्रवास नीतियों के महत्व को रेखांकित करता है।

मुख्य शब्द: महिला प्रव्रजन, सशक्तिकरण, शोषण, सामाजिक

परिचय

प्रवासन लंबे समय से मानव सभ्यता का एक मूलभूत पहलू रहा है, जिसने दुनिया भर में समाजों, अर्थव्यवस्थाओं और संस्कृतियों को आकार दिया है। पारंपरिक रूप से पुरुष कथाओं के वर्चस्व वाले प्रवासन प्रवचन ने हाल ही में गतिशीलता के स्वतंत्र एजेंट के रूप में महिलाओं की महत्वपूर्ण और बढ़ती भूमिका को मान्यता देने के लिए बदलाव किया है। महिलाओं का प्रवास - चाहे वह ग्रामीण से शहरी, अंतर-राज्यीय या अंतर्राष्ट्रीय हो - वैश्विक श्रम शक्ति और सामाजिक-आर्थिक विकास ढाँचे के भीतर तेजी से महत्वपूर्ण हो गया है। निष्क्रिय अनुयायी या आश्रित होने से दूर, महिलाएँ अब बेहतर आजीविका, शिक्षा और व्यक्तिगत विकास के अवसरों की तलाश में स्वतंत्र रूप से प्रवास कर रही हैं। यह घटना महिलाओं के सामाजिक सशक्तिकरण के लिए गहन निहितार्थ रखती है। प्रवासन पारंपरिक लिंग भूमिकाओं को बदलने, स्वायत्तता को बढ़ावा देने और संसाधनों, निर्णय लेने और नेतृत्व तक महिलाओं की पहुँच बढ़ाने के लिए एक शक्तिशाली उत्प्रेरक के रूप में काम कर सकता है। महिला प्रवासियों द्वारा भेजे गए धन से न केवल परिवार का भरण-पोषण होता है, बल्कि व्यापक सामुदायिक विकास में भी योगदान होता है, जिससे महिलाओं के आर्थिक मूल्य की धारणा बदल जाती है। इसके अलावा, विविध संस्कृतियों और वातावरणों के संपर्क में आने से पितृसत्तात्मक मानदंडों को चुनौती मिल सकती है, जिससे महिलाओं को अपनी पहचान को फिर से परिभाषित करने और अपने जीवन पर अधिक नियंत्रण स्थापित करने में मदद मिलती है। हालाँकि, महिलाओं का प्रवास चुनौतियों से रहित नहीं है। प्रवासी महिलाओं को अक्सर आर्थिक भेद्यता और लिंग-आधारित भेदभाव के दोहरे बोझ का सामना करना पड़ता है। उनके श्रम को अक्सर कम आँका जाता है, और वे घरेलू और विदेशी श्रम बाजारों में शोषण, दुर्व्यवहार और हाशिए पर जाने के अनुपातहीन रूप से सामने आती

हैं। सामाजिक अलगाव, कानूनी अदृश्यता और सामाजिक सुरक्षा प्रणालियों तक सीमित पहुँच इन मुद्दों को और जटिल बनाती है। इस संदर्भ में, महिलाओं के प्रवास का विश्लेषण न केवल जनसांख्यिकीय या आर्थिक प्रवृत्ति के रूप में करना ज़रूरी हो जाता है, बल्कि एक परिवर्तनकारी प्रक्रिया के रूप में भी किया जाना चाहिए, जिसमें मौजूदा सत्ता संरचनाओं को मजबूत करने या चुनौती देने की क्षमता हो। इस पत्र का उद्देश्य महिलाओं के प्रवास और सामाजिक सशक्तीकरण के बीच बहुआयामी संबंधों का पता लगाना है, जो इस बात पर ध्यान केंद्रित करता है कि गतिशीलता परिवार, काम और समाज में महिलाओं की भूमिकाओं को कैसे प्रभावित करती है। यह उन बाधाओं की भी जाँच करता है जो इस सशक्तीकरण में बाधा डालती हैं और यह सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक नीतिगत हस्तक्षेपों पर चर्चा करती हैं कि प्रवास अधिक लैंगिक समानता और समावेशी विकास का मार्ग बन जाए।

पिछले कुछ दशकों में, वैश्वीकरण, शहरीकरण और बदलते सामाजिक-आर्थिक गतिशीलता ने महिला प्रवास में लगातार वृद्धि में योगदान दिया है। कई विकासशील देशों में, महिलाएँ अब न केवल पुरुष परिवार के सदस्यों पर आश्रित के रूप में बल्कि प्राथमिक कमाने वाले और निर्णय लेने वाले के रूप में भी प्रवास करती हैं। इस बदलाव ने मूल और गंतव्य क्षेत्रों दोनों में महिलाओं द्वारा निभाई जाने वाली सामाजिक-आर्थिक भूमिकाओं का पुनर्मूल्यांकन करने के लिए प्रेरित किया है। चाहे घरेलू कामगार, देखभाल करने वाले, फैक्ट्री कर्मचारी या पेशेवर के रूप में काम कर रही हों, प्रवासी महिलाएँ राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं, अक्सर ऐसे क्षेत्रों में जहाँ उनके श्रम को कम आंका जाता है और अनदेखा किया जाता है। प्रवास की सशक्तीकरण क्षमता विशेष रूप से उन तरीकों में दिखाई देती है, जिनसे यह महिलाओं को प्रतिबंधात्मक लिंग मानदंडों को चुनौती देने की अनुमति देता है। कई समाजों में, गतिशीलता पारंपरिक रूप से पुरुषत्व से जुड़ी रही है, जबकि महिलाओं की आवाजाही को सामाजिक रूप से नियंत्रित किया जाता रहा है। जैसे-जैसे महिलाएँ भौतिक, सामाजिक और आर्थिक सीमाओं को पार करती हैं, उन्हें अक्सर अपने वित्त, करियर और जीवन विकल्पों पर अधिक स्वायत्तता मिलती है। ये परिवर्तन उनके घरेलू समुदायों में वापस आ सकते हैं, जहाँ लौटने वाले प्रवासी या प्रेषण भेजने वाली महिलाएँ अधिक सम्मान और प्रभाव प्राप्त कर सकती हैं।

साथ ही, प्रवास का अनुभव वर्ग, जाति, जातीयता, धर्म, कानूनी स्थिति और शिक्षा जैसे अंतर्विषयक कारकों द्वारा गहराई से आकार लेता है। ये कारक महिलाओं की सुरक्षित कार्य, कानूनी सुरक्षा, सामाजिक सेवाओं और सहायता के नेटवर्क तक पहुँच को निर्धारित करते हैं। अनौपचारिक और अनिर्दिष्ट प्रवासी महिलाएँ विशेष रूप से श्रम शोषण, तस्करी, लिंग आधारित हिंसा और स्वास्थ्य जोखिमों के प्रति संवेदनशील होती हैं। इसके अतिरिक्त, लिंग-संवेदनशील प्रवास नीतियों और सामाजिक सुरक्षा जाल की अनुपस्थिति इन कमजोरियों को बढ़ाती है। जबकि प्रवास के बारे में चर्चा अक्सर आर्थिक संकेतकों पर केंद्रित होती है, इसके व्यापक सामाजिक और मनोवैज्ञानिक आयामों पर विचार करने की आवश्यकता बढ़ रही है। सशक्तीकरण केवल आय या रोजगार के बारे में नहीं है; इसमें निर्णय लेने, सार्वजनिक जीवन में भाग लेने, न्याय तक पहुँचने और सम्मान के साथ जीने की क्षमता शामिल है। इसलिए, महिलाओं का प्रवास एक ऐसा लेंस प्रदान करता है जिसके माध्यम से यह जांच की जा सकती है कि गतिशीलता कैसे पहचान को नया रूप देती है, शक्ति की गतिशीलता को फिर से परिभाषित करती है और सामाजिक संबंधों को फिर से परिभाषित करती है।

प्रवास का स्त्रीकरण

प्रवासन अध्ययनों में "प्रवास के स्त्रीकरण" की घटना का अच्छी तरह से दस्तावेजीकरण किया गया है। सास्किया सैसेन (2000) और एलेनोर कोफ़मैन (2004) जैसे विद्वानों ने दिखाया है कि वैश्विक प्रवास प्रवाह में महिलाओं की बढ़ती दृश्यता केवल संख्यात्मक नहीं है, बल्कि संरचनात्मक भी है। महिलाएँ अब प्रवासन में सक्रिय एजेंट हैं, जो अक्सर अपने परिवारों का समर्थन करने या व्यक्तिगत आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए स्वतंत्र रूप से प्रवास करती हैं। यह बदलाव पारंपरिक

धारणाओं को चुनौती देता है कि महिलाएँ केवल आश्रितों के रूप में प्रवास करती हैं और लिंग आधारित लेंस के माध्यम से प्रवासन को फिर से समझने की आवश्यकता को रेखांकित करती हैं।

प्रेरणा और चालक

महिलाओं का प्रवास "पुश" और "पुल" कारकों के मिश्रण से प्रेरित होता है। पुश कारकों में अक्सर गरीबी, बेरोजगारी, लिंग आधारित हिंसा, शिक्षा तक पहुंच की कमी और गृह देश में सामाजिक प्रतिबंध शामिल होते हैं (यूएन महिला, 2017)। पुल कारकों में घरेलू, देखभाल और सेवा क्षेत्रों में महिला श्रम की मांग, बेहतर मजदूरी और गंतव्य क्षेत्रों में अधिक उदार लिंग मानदंड शामिल हो सकते हैं। पाइपर (2008) और चैंट और रेडक्लिफ (1992) द्वारा किए गए अध्ययन प्रवास प्रवाह को आकार देने में वैश्वीकरण और देखभाल अर्थव्यवस्थाओं के प्रभाव पर जोर देते हैं, विशेष रूप से वैश्विक दक्षिण से वैश्विक उत्तर की ओर।

प्रवासन और आर्थिक सशक्तिकरण

प्रवासन रोजगार, आय और वित्तीय स्वतंत्रता तक पहुँच बढ़ाकर महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण को बढ़ा सकता है। दक्षिण अफ्रीका में आंतरिक प्रवास पर पोसेल और कैसले (2006) और अंतरराष्ट्रीय प्रवास पर महलर और पेसर (2001) द्वारा किए गए शोध से पता चलता है कि प्रवास करने वाली महिलाओं को अक्सर घरेलू वित्त और निर्णय लेने पर अधिक नियंत्रण प्राप्त होता है। महिलाओं द्वारा घर भेजे जाने वाले धन का बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य और घरेलू जरूरतों पर खर्च होने की अधिक संभावना होती है, जो आर्थिक जिम्मेदारी के लिंग आधारित पैटर्न को दर्शाता है।

सामाजिक सशक्तिकरण और लिंग भूमिका परिवर्तन

प्रवासन से पारंपरिक लिंग भूमिकाओं में बदलाव आ सकता है। प्रवासी महिलाओं को अक्सर बढ़ी हुई स्वायत्तता, निर्णय लेने में अधिक भागीदारी और पहचान और आत्म-धारणा में बदलाव का अनुभव होता है। जैसा कि पार्राडो और फ्लिपन (2005) द्वारा प्रलेखित किया गया है, जो महिलाएं प्रवास करती हैं वे अक्सर अधिक मुखर और आत्मनिर्भर बन जाती हैं। हालाँकि, इस सशक्तिकरण की सीमा मूल और गंतव्य दोनों देशों के कानूनी, सांस्कृतिक और आर्थिक वातावरण पर निर्भर करती है।

जोखिम और कमज़ोरियाँ

प्रवासन अवसर प्रदान करता है, लेकिन यह महिलाओं को कई जोखिमों के लिए भी उजागर करता है। महिला प्रवासी अक्सर अनौपचारिक, अनियमित क्षेत्रों में काम करती हैं, जहाँ उन्हें कानूनी सुरक्षा और सामाजिक सुरक्षा का अभाव होता है। अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO, 2015) के अनुसार, प्रवासी घरेलू कामगार विशेष रूप से दुर्व्यवहार, शोषण और तस्करी के प्रति संवेदनशील होते हैं। एंडरसन (2000) और एहरनेरिच और होक्सचाइल्ड (2003) द्वारा किए गए अध्ययन प्रवासन के भावनात्मक और शारीरिक नुकसान को उजागर करते हैं, विशेष रूप से देखभाल कार्य क्षेत्र में, जहाँ महिलाओं से भावनात्मक श्रम करने की अपेक्षा की जाती है, जिसके लिए उन्हें बहुत कम मान्यता या मुआवजा मिलता है।

कानूनी और नीतिगत ढाँचे

कानूनी संदर्भ महिलाओं के प्रवास के परिणामों को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करते हैं। राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय नीतियाँ अक्सर महिला प्रवासियों की विशिष्ट आवश्यकताओं को ध्यान में रखने में विफल रहती हैं। उदाहरण के लिए, प्रतिबंधात्मक वीजा नीतियाँ, श्रम सुरक्षा की कमी और लिंग-अंधा आब्रजन कानून महिलाओं की भेद्यता को बढ़ा सकते हैं। एरिज़पे (1999) और पाइपर और सैटरथवेट (2008) जैसे विद्वान अधिक समावेशी और लिंग-संवेदनशील नीति ढाँचों की माँग करते हैं जो श्रमिकों, प्रवासियों और मनुष्यों के रूप में महिलाओं के अधिकारों को पहचानते हैं।

अंतर्संबंध और प्रवास

किम्बर्ले क्रेनशॉ (1989) द्वारा व्यक्त किए गए अंतर्संबंध सिद्धांत को प्रवास अध्ययनों में तेजी से लागू किया गया है। यह इस बात पर जोर देता है कि कैसे अतिव्यापी पहचानें - जैसे लिंग, नस्ल, वर्ग, जाति और कानूनी स्थिति - प्रवासी महिलाओं के अनुभवों को आकार देती हैं बल्कि, यह विशेषाधिकार और उत्पीड़न की परस्पर जुड़ी प्रणालियों द्वारा मध्यस्थता की जाती है।

समुदाय और अंतरराष्ट्रीय नेटवर्क

सामाजिक नेटवर्क प्रवास के अनुभव को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। प्रवासी महिलाएँ अक्सर सहायता, सूचना और रोज़गार के अवसरों के लिए रिश्तेदारी और समुदाय-आधारित नेटवर्क पर निर्भर रहती हैं। अंतरराष्ट्रीय नेटवर्क महिलाओं को विदेश में नई पहचान बनाने के साथ-साथ अपने गृह देशों के साथ संबंध बनाए रखने की अनुमति देते हैं। लेविट (2001) की "सामाजिक प्रेषण" की अवधारणा दिखाती है कि कैसे विचार, मानदंड और मूल्य इन नेटवर्क के माध्यम से स्थानांतरित होते हैं, जो घर पर लिंग गतिशीलता को प्रभावित करते हैं।

प्रवासन, लिंग और सशक्तिकरण के बीच संबंध: सिद्धांत और दृष्टिकोण

महिलाओं की स्थिति और ग्रामीण घर से शहर के कारखाने तक बदलते स्थानिक संदर्भ में वे खुद को कैसे स्थापित करती हैं, इसकी जांच करने से पहले, हम पहले संस्थागत कारकों पर विचार करेंगे जो उनके स्थानांतरित होने (रहने) के निर्णय को आरंभ (हस्तक्षेप) करते हैं। यह खंड तर्क देता है कि प्रवास के निर्णय न केवल आर्थिक प्रोत्साहन के प्रति तर्कसंगत प्रतिक्रिया द्वारा निर्देशित होते हैं, बल्कि सांस्कृतिक और सामाजिक निर्धारकों (उदाहरण के लिए डी हान 1999) से भी प्रभावित होते हैं। चूंकि जनसंख्या की आवाजाही लिंग आधारित होती है और संरचना और एजेंसी की जटिल अंतःक्रिया का परिणाम होती है, इसलिए गिडेंस द्वारा विकसित एक संरचना क्रिया दृष्टिकोण जो मानव एजेंसी और सामाजिक संरचना (गिडेंस 1979) की पारस्परिक निर्भरता पर जोर देता है, एक अधिक उपयुक्त अनुमानी है (चैंट और रेडक्लिफ 1992 देखें)। संरचना अवधारणा को पूरक करने के लिए, यह तर्क दिया जाता है कि सशक्तिकरण ढाँचे को एक प्रिज्म के रूप में नियोजित किया जा सकता है जिसके माध्यम से प्रवास प्रक्रिया में बहुस्तरीय और अंतःक्रियात्मक गतिशीलता की जांच की जा सकती है। शक्ति और महिला सशक्तिकरण पर कई अध्ययनों पर चर्चा की जाएगी, और महिलाओं पर प्रवास के परिवर्तनकारी, मुक्तिदायक और अवरोधक प्रभावों को समझने के लिए एक योजनाबद्ध मॉडल की रूपरेखा तैयार की जाएगी। इस तरह के परिप्रेक्ष्य में महिलाओं को मुख्य परिवर्तन एजेंट के रूप में रखा जाता है, जबकि काम पर विभिन्न वैश्विक और स्थानीय कारकों को स्वीकार किया जाता है। आगे बढ़ने वाली महिलाओं के मुद्दों को संबोधित करने के लिए, यह सुझाव दिया जाता है कि सशक्तिकरण की अवधारणा को महिला प्रवास अध्ययन में फिट करने के लिए व्यापक बनाया जाना चाहिए।

‘प्रवास का स्त्रीकरण’

पिछले 40 वर्षों में, अंतर्राष्ट्रीय प्रवासियों की संख्या 1960 में 75 मिलियन से बढ़कर 2000 में 175 मिलियन हो गई है (आईओएम 2005) और अंतर्राष्ट्रीय प्रवास में महिलाएँ हमेशा से केंद्रीय घटक रही हैं। प्रवास में पुरुष प्रभुत्व की आम धारणा और 'प्रवास के स्त्रीकरण' की हालिया धारणा (कोसर और लुट्ज़ 1998; फ़िज़ाकलिया 1998 देखें) दोनों ही त्रुटिपूर्ण हैं और उन्हें और अधिक स्पष्टीकरण की आवश्यकता है। 1960 में कुल प्रवास प्रवाह में महिला प्रवासियों की संख्या पहले से ही लगभग 47% थी और 2000 में इसका अनुपात लगातार बढ़कर अनुमानित 49% हो गया (आईएलओ 2003)। प्रवासन पैटर्न भी विकसित हुआ है, जिसमें अन्य पुरुष रिश्तेदारों का अनुसरण करने या परिवार के सदस्यों के साथ जुड़ने के बजाय शिक्षा और रोजगार के अवसरों की तलाश में अधिक महिलाएँ अपने दम पर आगे बढ़ रही हैं (मार्टिन 2005)। फिर भी, 'प्रवास का स्त्रीकरण' एक सार्वभौमिक प्रक्रिया नहीं है क्योंकि इसमें महत्वपूर्ण क्षेत्रीय और क्षेत्रीय अंतर हैं। उदाहरण के लिए, दुनिया में प्रवासी श्रम के सबसे बड़े निर्यातक के रूप में, फिलीपींस में अधिकांश प्रवासी महिलाएँ हैं (90 के दशक में लगभग 60%) जबकि मेक्सिको, दूसरे सबसे बड़े निर्यातक के रूप में, वहाँ अधिक पुरुष प्रवासी हैं जिनमें से अधिकांश अमेरिका में काम करने के लिए प्रवास करते हैं (एंगल 2004)। जिन देशों में केवल अस्थायी प्रवास की अनुमति है, वहाँ पुरुष प्रवासियों का अनुपात अधिक है, विशेष रूप से निर्माण, खनन आदि जैसे मर्दाना उद्योग में (मार्टिन 2005)। अंतर्राष्ट्रीय प्रवास के साथ-साथ, साक्ष्य ने सुझाव दिया कि सामान्य रूप से आंतरिक प्रवास की मात्रा में वृद्धि हुई है, विशेष रूप से महिलाओं को शामिल करते हुए (देशिंगकर 2005)। क्षेत्रीय तुलना ने सुझाव दिया कि लैटिन अमेरिका और दक्षिण-पूर्व एशिया में महिलाओं का प्रवास अधिक है (डेविस 2003, गेस्ट 2003 औद्योगिकीकरण ने महिलाओं की श्रम भागीदारी को बढ़ाया है और 'श्रम के वैश्विक नारीकरण' (स्टैंडिंग 1989) की यह धारणा 'प्रवास के नारीकरण' के समानांतर चलती है, जिसमें जनसंख्या की आवाजाही और श्रम का विभाजन दोनों ही स्पष्ट रूप से लिंग आधारित हैं। उद्योगों और सेवाओं में बढ़ती मांग महिलाओं को आगे बढ़ने के लिए आकर्षित करती है और नियोजक उन्हें भर्ती करने के लिए आकर्षित होते हैं क्योंकि उन्हें पुरुषों की तुलना में सस्ता और अधिक विनम्र माना जाता है। महिलाओं को देखभाल और घर के काम का स्वाभाविक प्रदाता माना जाता है (बॉक और ड्यूडेन इन लुट्ज़ 2002) और अफ्रीकी और दक्षिण एशियाई महिला प्रवासियों के लिए घरेलू काम करना आम बात है (देशिंगकर और ग्रिम 2005)। प्रवासी महिलाएँ सेक्स वर्क में भी लगी हुई हैं, या तो स्वेच्छा से या जबरन वेश्यावृत्ति में फंसी हुई हैं (मार्टिन 2005)।

प्रवासन और महिला सशक्तिकरण

महिलाओं के प्रवास को अक्सर भेदभाव और शोषण जैसे नकारात्मक परिणामों से जोड़ा जाता है, और मास मीडिया प्रवासी महिलाओं को पीड़ित करने की कोशिश करता है। मुख्य ध्यान लैंगिक श्रम विभाजन (एंकर और हेन 1986), कठोर कार्य स्थितियों और दुर्व्यवहारों (ब्रोचमैन 1990), कर्तव्यनिष्ठ और पुत्रवत बेटियों के रूप में पारंपरिक लिंग भूमिकाओं को कायम रखने (ग्रीनहालघ 1985) और निम्न वर्ग गतिशीलता (पैरेनस 2001) द्वारा नौकरी के अवसरों और मजदूरी आय पर प्रतिकूल प्रभाव जैसे शक्तिहीन करने वाले प्रभावों पर रहा है। घर पर पितृसत्तात्मक उत्पीड़न से मुक्ति के बजाय, लिंग स्थिति की यथास्थिति को अक्सर संरक्षित या मजबूत किया जाता है, और महिलाएँ 'एक घर-आधारित पितृसत्तात्मक से दूसरे घर में जाती हैं, जहाँ उनकी स्थिति मूल से बेहतर या बदतर नहीं होती है' क्योंकि वे मर्दाना पूंजीवादी व्यवस्था में अधीनस्थ होती हैं (ह्यूगो 1997)। शहरी क्षेत्रों में कारखानों को यातनागृह के रूप में चित्रित किया जाता है जहाँ महिलाओं को पूंजीपतियों के अतृप्त लालच को संतुष्ट करने के लिए कैद किया जाता है। प्रवासी महिलाओं की कमज़ोरी के जवाब में, अंतर्राष्ट्रीय समुदाय 1990 में संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा अपनाए गए सभी प्रवासी श्रमिकों और उनके परिवारों के सदस्यों के अधिकारों के संरक्षण पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन जैसे अंतर्राष्ट्रीय साधनों में उनके अधिकारों को सुनिश्चित करने के लिए कदम उठाता है, हालाँकि वादों को जरूरी नहीं कि कार्यों में तब्दील किया जाए (मार्टिन 2005)। प्रवासन के निश्चित रूप से अपने नकारात्मक पहलू हैं, लेकिन क्या यह केवल महिलाओं को अशक्त बनाता है? हालाँकि कई विद्वानों का तर्क है कि प्रवासन के सशक्तीकरण और अशक्तीकरण दोनों प्रभाव हैं, उनमें से अधिकांश केवल बाद वाले पर ही

ध्यान देते हैं। एक संभावित व्याख्या यह है कि तीसरी दुनिया की महिलाओं को अक्सर कमज़ोर, आवाज़हीन और चेहराविहीन विषय, एकरूप और अविभाज्य (ऑग 1988) के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। उनकी व्यक्तिगत एजेंसी और सामाजिक एजेंट के रूप में बातचीत करने और संरचना को बदलने की उनकी क्षमता को पूरी तरह से नकार दिया जाता है। भले ही एक 'अभिनेता-केंद्रित' दृष्टिकोण अपनाया जाए, लेकिन प्रवासन में व्यक्ति, परिवार और संस्थानों के बीच जटिल और आकस्मिक अंतःक्रियाओं को शायद ही कभी समझा जाता है। अशक्तीकरण पर गलत ध्यान केंद्रित करने से सशक्तीकरण की तरलता को नजरअंदाज कर दिया गया है, और अधीनता के खिलाफ महिलाओं के सक्रिय संघर्ष को मान्यता नहीं दी गई है।

एक अधिक संतुलित दृष्टिकोण प्रवास को दोधारी तलवार के रूप में लेगा और स्वीकार करेगा कि प्रवास में शामिल महिलाओं के लिए अपने आनंदमय क्षण हो सकते हैं, भले ही बाहरी लोगों की नज़र में वे महत्वहीन हों। कथाएँ स्वयं प्रवासी महिलाओं के दृष्टिकोण से शुरू होनी चाहिए: वे प्रवास को कैसे देखती हैं; यह अनुभव उनके एजेंडे और आजीविका रणनीतियों को कैसे आकार देता है, और सबसे बढ़कर, उनके 'स्व' की भावना और सत्ता संरचनाओं, यानी भीतर की शक्ति के साथ संवाद/बातचीत करने की उनकी इच्छा और क्षमता। महिला रोजगार और सशक्तीकरण एक दूसरे से जुड़े हुए हैं और हालाँकि उनका रिश्ता 'परेशान' बना हुआ है, 'कई महिलाएँ खुद महसूस करती हैं कि उनके बीच एक संबंध है' (मूर का हवाला चैंट और क्रैस्के 2002 में दिया गया है)। हम महिलाओं के अपने और अक्सर विरोधाभासी विवरणों को स्वीकार करेंगे कि उनके जीवन में प्रवास का क्या मतलब है।

प्रवासन ने महिलाओं, उनके परिवारों और सामाजिक संरचना को सशक्त बनाने के अर्थ में कैसे प्रभावित किया है? सशक्तिकरण विमर्श के केंद्र में स्थित, प्रवासन का महिलाओं के 'स्वत्व' और आंतरिक शक्ति की भावना के निर्माण पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। ओइशी के फील्डवर्क (2005) से पता चला कि प्रवासन का महिलाओं पर कुछ सकारात्मक प्रभाव पड़ा है, लगभग 90% फिलिपिनो उत्तरदाताओं ने सहमति व्यक्त की कि उन्होंने आत्मविश्वास और कौशल-सेट में वृद्धि जैसे सकारात्मक बदलावों का अनुभव किया है, भले ही उनमें से अधिकांश का शोषण और/या उत्पीड़न किया गया हो। आत्म-सम्मान में वृद्धि के अलावा, शहरी कार्य महिलाओं को अधिक स्थिर नकदी ला सकते हैं, जितना वे संभवतः अपने घर पर कृषि रोजगार से कमा सकती हैं, और चूंकि अधिकांश प्रवासी अपने जीवन-चक्र के शुरुआती चरण में हैं, इसलिए ये युवा और एकल महिलाएं अपनी कमाई पर अधिक नियंत्रण रख सकती हैं (जावा पर वुल्फ 1992)। हालाँकि बढ़ी हुई स्वायत्तता को अपने आप में बढ़ी हुई एजेंसी के रूप में नहीं लिया जा सकता है क्योंकि महिलाएँ अभी भी पारिवारिक और सामाजिक नियंत्रणों के अधीन हैं, घर से दूरी, आय और सहायता नेटवर्क पर अधिक नियंत्रण फिर भी उन्हें माता-पिता के नियंत्रण को तोड़ने और कम से कम एक निश्चित अवधि के लिए अपने जीवन की शर्तों पर बातचीत करने के लिए कुछ लाभ देता है, उदाहरण के लिए विवाह और प्रजनन जैसी निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में महिलाओं की स्थिति मजबूत होती है, और फ़ैक्टरी सिस्टम में अधीनस्थ होने के बावजूद, वे चुनाव करने और पारंपरिक पितृसत्तात्मक पारिवारिक अधिकार को चुनौती देने में सक्षम हैं (सफ़ा 1990 डोमिनिकन गणराज्य और प्यूर्टो रिको पर)। सामूहिक और संरचनात्मक स्तर पर, 'मैं नहीं कर सकता' की नियतिवादी भावना का 'हम कर सकते हैं' की भावना में परिवर्तन देखा जा सकता है और महिलाएँ नियोक्ताओं के शोषण का सूक्ष्म तरीके से विरोध कर सकती हैं (पैरेनस 2001) और रणनीतिक वार्ता में शामिल हो सकती हैं जो दीर्घकालिक प्रवास नीति में सक्रिय नागरिकता का उपयोग करती हैं (कॉन्स्टेबल 1997)। जैसा कि कैलडवेल ने तर्क दिया, 'स्थायी प्रवास से कहीं अधिक, आवागमन के चक्राकार रूपों में ग्रामीण क्षेत्रों में नए विचारों, दृष्टिकोणों और ज्ञान को फैलाने और सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रियाओं में बहुत योगदान देने की क्षमता है' (1969, 45), महिला प्रवास के दोलनशील और लौकिक गुण उनके पुरुष समकक्षों के साथ-साथ यह भी दर्शाते हैं कि व्यक्तिगत सशक्तिकरण के अलावा, भेजने वाले क्षेत्रों में महिला रिश्तेदारों को भी अलग-अलग डिग्री में लाभ मिल सकता है। प्रवास, लिंग और सशक्तिकरण के बीच बहुआयामी अंतःक्रियाओं को समाहित करने के लिए, यह तर्क दिया जाता है

कि एक बहुस्तरीय और गतिशील दृष्टिकोण जो व्यक्तिगत एजेंसी को केंद्र में रखता है और काम पर वैश्विक/स्थानीय कारकों को शामिल करता है, की बहुत आवश्यकता है। संरचना मॉडल से प्रेरित होकर, चित्र 2 एक योजनाबद्ध मॉडल है जो प्रवासन प्रवचनों में सशक्तिकरण को एक विश्लेषणात्मक घटक के रूप में शामिल करने का प्रयास करता है और उस चौराहे पर ध्यान केंद्रित करता है जहाँ संरचना और एजेंसी मिलती है। मॉडल का आधार महिलाओं की विविधता और अनुभवों पर विचार करना है, और एक ही घटनाओं की उनकी भिन्न और अक्सर परस्पर विरोधी व्याख्या को ध्यान में रखता है। वैश्विक, राष्ट्रीय और स्थानीय परिप्रेक्ष्य में लिंग आधारित कारक, जैसे व्यापार उदारीकरण, सरकारी नीतियाँ, महिलाओं के घर छोड़ने पर सामाजिक स्वीकृति, घरेलू रणनीतियाँ और व्यक्तिगत विचार, आदि प्रवासन निर्णयों को निर्धारित करते हैं और प्रवासियों के अनुभवों को आकार देते हैं, और प्रवासी महिलाएं इस दौरान व्यक्तिपरक रूप से (अ)सशक्त होती हैं।

निष्कर्ष

महिलाओं का प्रवास एक शक्तिशाली, बहुआयामी घटना का प्रतिनिधित्व करता है जो केवल शारीरिक गतिशीलता से परे आर्थिक भागीदारी, लिंग भूमिकाओं और सामाजिक पहचान में गहन परिवर्तनों को शामिल करता है। जैसा कि इस अध्ययन ने उजागर किया है, प्रवास जीवित रहने की रणनीति और सशक्तिकरण के साधन दोनों के रूप में काम कर सकता है। जो महिलाएं प्रवास करती हैं, उन्हें अक्सर स्वायत्तता, वित्तीय स्वतंत्रता और निर्णय लेने की शक्ति में वृद्धि होती है - ऐसे कारक जो उनके व्यक्तिगत और सामूहिक सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण रूप से योगदान करते हैं। हालाँकि, यह यात्रा बाधाओं के बिना नहीं है। प्रवासी महिलाओं को श्रम शोषण, सामाजिक बहिष्कार, सीमित कानूनी सुरक्षा और लिंग आधारित हिंसा सहित प्रणालीगत बाधाओं का सामना करना पड़ता है। ये चुनौतियाँ अक्सर वर्ग, जाति, जातीयता और आव्रजन स्थिति जैसे कारकों को जोड़कर और भी तीव्र हो जाती हैं। इसलिए, जबकि प्रवास पारंपरिक लिंग मानदंडों को नया रूप देने और सामाजिक गतिशीलता को बढ़ावा देने की क्षमता रखता है, इसके सशक्त प्रभाव न तो स्वचालित हैं और न ही गारंटीकृत हैं। इस पत्र में समीक्षा किए गए साहित्य और साक्ष्य व्यापक, लिंग-संवेदनशील नीतियों की आवश्यकता को रेखांकित करते हैं जो महिला प्रवासियों के अधिकारों और सम्मान की रक्षा करते हैं। इसमें मूल और गंतव्य दोनों देशों में उचित श्रम प्रथाओं, स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा और कानूनी सहायता तक पहुँच सुनिश्चित करना शामिल है। सशक्तिकरण को न केवल आर्थिक दृष्टि से देखा जाना चाहिए, बल्कि सामाजिक संरचनाओं में एजेंसी, आवाज़ और भागीदारी को बढ़ाने की एक व्यापक प्रक्रिया के रूप में भी देखा जाना चाहिए। निष्कर्ष रूप में, महिलाओं का प्रवास, जब समावेशी नीतियों और सामाजिक ढाँचों द्वारा समर्थित होता है, तो सार्थक सामाजिक परिवर्तन के लिए उत्प्रेरक हो सकता है। महिला प्रवासियों के अनूठे अनुभवों को स्वीकार करके और संबोधित करके, समाज अधिक न्यायसंगत विकास को बढ़ावा दे सकते हैं और वैश्विक स्तर पर लैंगिक न्याय को बढ़ावा दे सकते हैं। भविष्य के शोध और नीति-निर्माण को महिलाओं की आवाज़ और अनुभवों को केंद्र में रखना जारी रखना चाहिए ताकि प्रवास को जोखिम भरे प्रयास से सशक्तिकरण और अवसर के मार्ग में बदला जा सके।

संदर्भ

- [1] एंडरसन, बी. (2000). गंदा काम करना? घरेलू श्रम की वैश्विक राजनीति। जेड बुक्स।
- [2] एरिजपे, एल. (1999)। महिला प्रवासी और सामाजिक परिवर्तन। एस. चैंट (एड.) में, विकासशील देशों में लिंग और प्रवास (पृष्ठ 22-42)। बेलहेवन प्रेस।
- [3] बास्टिया, टी. (2014)। अंतर्संबंध, प्रवास और विकास। विकास अध्ययन में प्रगति, 14(3), 237-248। <https://doi.org/10.1177/1464993414521330>

- [4] चैंट, एस., और रैडक्लिफ, एस. ए. (1992)। प्रवास और विकास: लिंग का महत्व। एस. चैंट (एड.) में, विकासशील देशों में लिंग और प्रवास (पृष्ठ 1-29)। बेलहेवन प्रेस।
- [5] क्रेनशॉ, के. (1989)। नस्ल और लिंग के प्रतिच्छेदन को सीमांत बनाना: भेदभाव विरोधी सिद्धांत, नारीवादी सिद्धांत और नस्लवाद विरोधी राजनीति की एक अश्वेत नारीवादी आलोचना। यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो लीगल फोरम, 1989(1), 139–167।
- [6] एहरनेरिच, बी., और होक्सचाइल्ड, ए.आर. (संपादक)। (2003)। वैश्विक महिला: नई अर्थव्यवस्था में नैनी, नौकरानियाँ और यौनकर्म। हेनरी होल्ट एंड कंपनी।
- [7] अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO)। (2015)। प्रवासी श्रमिकों पर वैश्विक अनुमान: परिणाम और कार्यप्रणाली। ILO।
- [8] कोफ़मैन, ई. (2004)। लिंग आधारित वैश्विक प्रवास। इंटरनेशनल फ़ेमिनिस्ट जर्नल ऑफ़ पॉलिटिक्स, 6(4), 643–665। <https://doi.org/10.1080/1461674042000282777>
- [9] लेविट, पी. (2001)। ट्रांसनेशनल विलेजर्स। यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस।
- [10] महलर, एस. जे., और पेसर, पी. आर. (2001)। सत्ता के लिंग आधारित भूगोल: ट्रांसनेशनल स्पेस में लिंग का विश्लेषण। पहचान: संस्कृति और शक्ति में वैश्विक अध्ययन, 7(4), 441–459। <https://doi.org/10.1080/1070289X.2001.9962675>
- [11] पार्राडो, ई. ए., और फ्लिपन, सी. ए. (2005)। मैक्सिकन महिलाओं में प्रवास और लिंग। अमेरिकन सोशियोलॉजिकल रिव्यू, 70(4), 606–632। <https://doi.org/10.1177/000312240507000406>
- [12] पाइपर, एन. (2008)। प्रवास का स्त्रीकरण और विकास के सामाजिक आयाम: एशियाई मामला। थर्ड वर्ल्ड क्वार्टरली, 29(7), 1287–1303। <https://doi.org/10.1080/01436590802386427>
- [13] पाइपर, एन., और सैटरथवेट, एम. एल. (2008)। महिला प्रवासी श्रमिकों के अधिकार: अंतर्राष्ट्रीय मानदंड और स्थानीय प्रतिक्रिया। एस. ए. वाई. घोष (एड.), एशिया में प्रवास और लिंग (पृष्ठ 157–177)। SAGE प्रकाशन।
- [14] पोसेल, डी., और कैसले, डी. (2006)। दक्षिण अफ्रीका में प्रवास और प्रेषण: एक लिंग आधारित विश्लेषण। एम. क्रश और बी. डोडसन (संपादक), क्रॉसिंग बॉर्डर्स: जेंडर एंड माइग्रेशन इन अफ्रीका (पृष्ठ 177-206)। दक्षिणी अफ्रीकी प्रवास परियोजना।
- [15] सैसेन, एस. (2000)। महिलाओं का बोझ: वैश्वीकरण के प्रति-भूगोल और अस्तित्व का नारीकरण। जर्नल ऑफ इंटरनेशनल अफेयर्स, 53(2), 503–524।
- [16] सिल्वे, आर. (2004)। शक्ति, अंतर और गतिशीलता: प्रवासन अध्ययनों में नारीवादी प्रगति। मानव भूगोल में प्रगति, 28(4), 490–506। <https://doi.org/10.1191/0309132504ph490oa>
- [17] यूएन महिला। (2017)। महिलाएं आगे बढ़ रही हैं: प्रवासन, लैंगिक समानता और सतत विकास के लिए 2030 एजेंडा। लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण के लिए संयुक्त राष्ट्र संस्था।